पाठ 11

4R7DM2

कलम आज उनकी जय बोल

(प्रस्तुत कविता में कवि ने उन असंख्य शहीदों का गुणगान किया है, जिन्होंने अपने त्याग और बलिदान से देश में नयी चेतना जगायी है।)

कलम, आज उनकी जय बोल,

जला अस्थियाँ बारी-बारी

छिटकायी जिसने चिनगारी,

जो चढ़ गये पुण्य-वेदी पर लिये बिना गरदन का मोल।

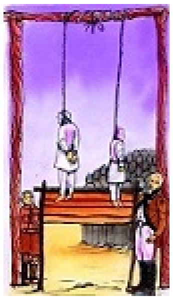

कलम, आज उनकी जय बोल।

जो अगणित लघु दीप हमारे

तूफानों में एक किनारे,

जल-जल कर बुझ गये, किसी दिन माँगा नहीं स्नेह मुँह खोल।

कलम, आज उनकी जय बोल।

पी कर जिनकी लाल शिखाएँ

उगल रहीं लू-लपट दिशाएँ

जिनके सिंहनाद से सहमी धरती रही अभी तक डोल।

कलम, आज उनकी जय बोल।

- रामधारी सिंह "दिनकर"

प्रस्तुत कविता राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा लिखी गयी है। दिनकर जी का जन्म सन् 1908 ई0 में बिहार के मुंगेर जिले में हुआ था। 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवन्ती', 'कुरुक्षेत्र', 'परशुराम की प्रतीक्षा' आदि उनकी महत्त्वपूर्ण काव्य रचनाएँ हैं। इन कविताओं में देश-प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना झलकती है। इनका देहावसान सन् 1974 ई0 में हो गया।

शब्दार्थ

जय बोल=विजय का गान करना, प्रशंसा के गीत गाना। **जला अस्थियाँ**=हड्डियाँ जलाकर अर्थात् अपना सबकुछ बलिदान कर। **छिटकायी जिसने चिनगारी**=जिसने लोगों में क्रान्ति की भावना या नयी चेतना फैलायी। **अगणित लघुदीप** = असंख्य या अनगिनत छोटे दीप। यहाँ कवि ने बलिदानी वीरों के लिए लघुदीप का प्रयोग किया है। **माँगा नहीं स्नेह मुँह**

खोल = यहाँ ‘स्नेह’ के दो अर्थ हैं- दीप के अर्थ में तेल और शहीदों के अर्थ में ‘प्रेम’। दीप जलते हुए समाप्त हो जाता है पर किसी से तेल की याचना नहीं करता उसी प्रकार देश की आन पर न जाने कितने वीर शहीद हो गये पर उन्होंने किसी से स्नेह और सम्मान की माँग नहीं की। **सिंहनाद** = ललकार, हुंकार।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. (क) ‘सुभाषचन्द्र बोस’ का उपनाम ‘नेता जी’ है। नीचे कुछ महापुरुषों के उपनाम दिये जा रहे हैं, उनका पूरा नाम लिखिए-

बापू, लौहपुरुष, देशबन्धु, महामना, लोकमान्य, मिसाइल मैन

(ख) देश-प्रेम कविताओं का संकलन कीजिए।

विचार और कल्पना

1. पाठ में कलम देशभक्तों का जयघोष कर रही है। कलम का अर्थ है-देश के रचनाकार अपनी रचनाओं से उनका अभिवादन करते हैं। देशभक्त तो सर्वोपरि होते हैं। उनका जयघोष केवल देशवासी ही नहीं करते, बल्कि पूरी प्रकृति भी उनके लिए मंगल गीत गाती है। आप बताइए कि बादल और पुष्प किस रूप में उनका जयगान करेंगे।

2. क्या आपके आस-पास कोई ऐसे व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने देश की सेवा में अपनी जान न्योछावर की है ? अपने बड़ों से पूछकर उनके बारे में लिखिए।

कविता से

1. कवि अपनी लेखनी से किसकी जय बोलने के लिए कह रहा है?

2. निम्नलिखित भाव कविता की किन पंक्तियों में आये हैं, लिखिए-

(क) जो बिना किसी प्रतिफल के कर्तव्य की पुण्य वेदी पर न्योछावर हो गये।

(ख) देश की आन पर मर मिटे पर उन लोगों ने किसी से स्नेह की माँग नहीं की।

3. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) पीकर जिनकी लाल शिखाएँ

उगल रहीं लू-लपट दिशाएँ।

(ख) जिनके सिंहनाद से सहमी

धरती रही अभी तक डोल ।

(ग) जला अस्थियाँ बारी-बारी

छिटकायी जिसने चिनगारी।

4. कविता की एक पंक्ति है ‘कलम, आज उनकी जय बोल’। इस पंक्ति को गद्य रूप में इस तरह से लिखा जा सकता है- ‘कलम, आज उनका जयगान कर’

नीचे दी गयी पंक्तियों को गद्य रूप में लिखिए-

जला अस्थियाँ बारी-बारी

छिटकायी जिसने चिनगारी

जो चढ़ गये पुण्य-वेदी पर

लिये बिना गरदन का मोल। कलम, आज उनकी जय बोल।

भाषा की बात

1. नीचे दिये गये विशेषण और विशेष्य (संज्ञा) का मिलान कीजिए-

विशेषण शब्द	विशेष्य शब्द
सहमी	वेदी
लाल	दीप
पुण्य	धरती
लघु	शिखाएँ

2. दिये गये शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

धरती, कलम, दीप, मुँह।

पढ़ने के लिए-

निम्नलिखित कविता को ध्यानपूर्वक पढ़िए-

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि! डाला जाऊँ
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जायें वीर अनेक।

(क) इस कविता पर दो प्रश्न बनाइए।

(ख) कविता का उचित शीर्षक दीजिए।